रांची, सोमवार, 25 .02 .2019

किसानों को राहत

छोटे और सीमांत खेतिहरों को व्यापक कृषि संकट से निकालने की कोशिश में केंद्र सरकार ने बजट में वित्तीय सहायता की घोषणा की थी. गोरखपुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किसानों के खाते में नकदी डालने की इस महत्वाकांक्षी योजना का शुभारंभ हो गया है. इस योजना के तहत 12 करोड़ से अधिक किसानों के खाते में तीन समान किस्तों में सालाना छह हजार रुपये स्थानांतरित किये जायेंगे. पहले चरण में एक करोड़ से अधिक किसान परिवार लाभार्थी होंगे और कुछ दिनों में एक करोड़ अन्य परिवारों को राहत मुहैया करा दी जायेगी. अच्छी फसल होने के बावजूद किसानों को उपज का उचित दाम मिल पाने में मुश्किल हो रही है. सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी के बाद भी मंडियों में खरीद की रफ्तार धीमी है. इसका सबसे ज्यादा खामियाजा छोटे किसानों को भुगतना पड़ रहा है. हमारे देश में दो हेक्टेयर यानी करीब पांच एकड़ जमीन से कम का मालिकाना रखनेवाले खेतिहर 85 फीसदी से अधिक हैं. ये खेती की लागत के साथ अपने जीवनयापन के लिए इसी काश्तकारी पर निर्भर हैं. ऐसे में उम्मीद यही है कि नकदी की आमद इन्हें फौरी तौर पर राहत देगी, लेकिन सभी लाभुकों तक 31 मार्च तक दो हजार रुपये की पहली किस्त पहुंचने में कई मुश्किलें हैं. रिपोर्टों के अनुसार, विभिन्न राज्य सरकारों ने सरकार के पब्लिक फाइनेंसियल मैनेजमेंट सिस्टम के पास 3.2 करोड़ आवेदन भेजा है. इनमें से 55 लाख लंबित हैं और 1.7 करोड़ को मंजूर कर लिया गया है. सिस्टम ने 84 लाख आवेदन निरस्त कर दिया है. नामंजूर हुए 33 फीसदी आवेदनों को फिर से भेजना पड़ सकता है. एक चुनौती लोकसभा चुनाव के मद्देनजर लागू होनेवाले आदर्श आचार संहिता की भी है. लाभुकों के खाते में पैसे पहुंचने की तारीख 31 मार्च से पहले ही संहिता लागू हो जायेगी. चूंकि बजट में की गयी घोषणा के मुताबिक यह योजना दिसंबर से लागू की गयी है, इसलिए तब तक पैसे के हस्तांतरण में कोई अड़चन नहीं आनी चाहिए, लेकिन संहिता लागू होने से पहले शुरुआती किस्त के लाभुकों की पहचान करने की प्रक्रिया पूरी करने से इस प्रक्रिया में आसानी होगी. चुनावी मौसम हो या न हो, किसी मसले पर राजनीति होना हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक स्थायी स्वभाव है. बहुत संभव है कि संहिता और हस्तांतरण भी एक मुद्दा बन जाये तथा विवाद का निबटारा चुनाव आयोग को करना पड़े. इस संबंध में यह भी उल्लेखनीय है कि लाभुकों की पहचान करने में सभी राज्यों ने एक-समान उत्साह नहीं दिखाया है. खबरों के मुताबिक, आवेदनों में 67 फीसदी हिस्सा भाजपा या भाजपानीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की राज्य सरकारों ने भेजा है, जबकि कांग्रेस शासित राज्यों से सिर्फ दो फीसदी आवेदन ही आये हैं. अकेले उत्तर प्रदेश से करीब 30 फीसदी आवेदन भेजे गये हैं और पश्चिम बंगाल से किसी भी लाभुक का नाम प्रस्तावित नहीं है. संभव है कि आगामी दिनों में यह असंतुलन दूर हो जाये और आचार संहिता के लागू होने से पहले सभी सही लाभुकों को पहली किस्त का भुगतान हो जाए.

इस योजना के तहत 12 करोड़ से अधिक किसानों के खाते में तीन समान किस्तों में सालाना छह हजार रुपये स्थानांतरित किये जायेंगे.

सबक सिखाना है, पर धैर्य न खोएं

आशुतोष चतुर्वेदी
प्रधान संपादक, प्रभात खबर
ashutosh.chaturvedi
@prabhatkhabar.in

पुलवामा हमले के बाद पूरा देश उद्वेलित हैं. देश के लोगों में आतंकवादियों और पाकिस्तान के खिलाफ भारी गुस्सा है. इतनी बड़ी संख्या में हमारे सुरक्षा बल के भाइयों के शहीद होने से हम आप सभी का उद्वेलित होना स्वाभाविक है, लेकिन इस उत्तेजना में हम आप आपा न खोएं. इससे हमें बचना है. पिछले दिनों कुछ स्थानों से ऐसी खबरें आयीं कि देश में कश्मीरियों को निशाना बनाया गया. यह चिंताजनक स्थिति है. ऐसी घटनाओं को तत्काल रोकना होगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीरियों पर हुए हमले की सही वक्त पर निंदा की है. उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि हमारी लड़ाई कश्मीर के लिए है, कश्मीरियों के खिलाफ नहीं है. एक जनसभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि कश्मीरी बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी हमारी है. कश्मीर का बच्चा-बच्चा आतंकवादियों के खिलाफ है. हमें उसे अपने साथ रखना है. अमरनाथ की यात्रा करने लाखों श्रद्धालु जाते हैं, उनकी देखभाल कश्मीर का बच्चा करता है. अमरनाथ यात्रियों को जब गोली लगी, तो कश्मीर के मुसलमान खून देने के लिए कतार लगा कर खड़े हो गये थे. पिछले दिनों कश्मीरी बच्चों के साथ हिंदुस्तान के किसी कोने में क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, घटना छोटी थी या बड़ी थी, मुद्दा यह नहीं है. इस देश में यह नहीं होना चाहिए. कश्मीर में जैसे हमारे जवान शहीद होते हैं, वैसे ही कश्मीर के लाल भी इन आतंकवादियों की गोलियों के शिकार होते हैं. नरेंद्र मोदी ने कहा कि अगर हमें आतंकवाद को जड़ से उखाड़ना है, तो गलती नहीं करनी है. आम कश्मीरी भी आतंकवाद से मुक्ति चाहता है.. मोदी ने कहा कि कश्मीर के पंच-सरपंचों ने मुझसे किया वादा निभाया है. मैंने उनसे कहा था कि जब आतंकवादी स्कूल जलाते हैं, तब वह इमारत नहीं जलाते हैं, आपके बच्चों का भविष्य जलते हैं. आज गर्व हैं कि कश्मीर घाटी के पंच-सरपंचों ने एक भी स्कूल जलने नहीं दिया है. कहा कि वह दुनियाभर में आतंकियों का दाना-पानी बंद करने में जुटे है. दुनिया में तब तक शांति संभव नहीं है, जब तक आतंक की फैक्ट्रियां चलती रहेंगी.

हमें धैर्य रखना चाहिए और प्रधानमंत्री के वादे पर भरोसा करना चाहिए. यह जान लीजिए कि पाकिस्तान 70 साल पुराना रोग है और यह धीरे-धीरे ही ठीक होगा. इसमें कभी सैन्य कार्रवाई करनी होगी, कभी कूटनीतिक रूप से पाकिस्तान को अलग-थलग करना होगा, तो कभी पानी को हथियार की तरह इस्तेमाल करना होगा और कभी-कभी पर्दे के पीछे बातचीत भी करनी होगी. पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार कहा था कि आप अपना दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं बदल सकते हैं. अंतरराष्ट्रीय जगत भी यह स्वीकार कर रहा है कि भारत में भारी गुस्सा है. अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने भी मीडिया से बातचीत में स्वीकार किया है कि इस समय भारत और पाकिस्तान के बीच हालात बेहद खराब हैं. दोनों देशों के बीच एक खतरनाक स्थिति है. उनका कहना था कि वह तनाव के हालात जल्द खत्म होते देखना चाहते हैं. ट्रंप ने कहा कि बहुत लोगों को मार दिया गया है. हम इस प्रक्रिया पर नजर रखे हुए हैं. भारत बहुत सख्त कदम उठाने पर गौर कर रहा है. परिस्थितियां बहुत ही नाजुक हालात की ओर जाते दिख रही हैं. कश्मीर में जो कुछ हुआ, उससे भारत पाकिस्तान के बीच बहुत-सी समस्याएं खड़ी हो गयी हैं.

कश्मीर में जैसे हमारे जवान शहीद होते हैं, वैसे ही वहां के लाल भी इन आतंकवादियों की गोलियों के शिकार होते हैं. आतंकवाद को जड़ से उखाड़ना है, तो गलती नहीं करनी है. उत्तेजना में हम आप आपा न खोएं.

इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन जैशे मोहम्मद ने ली थी. यह कितना हास्यास्पद है कि बावजूद इसके पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान सबूत मांग रहे हैं. यह जगजाहिर है कि जैश मोहम्मद ने पाकिस्तान के बहावलपुर शहर में अपना मुख्यालय बना रखा है और इसका मुखिया मसूद अजहर यहीं से अपनी आतंकी गतिविधियां संचालित करता है. इसके पहले तत्कालीन पाक पीएम नवाज शरीफ ने अपने देश की विदेश नीति पर सवाल उठाते हुए स्वीकार किया था कि पाकिस्तान में अब भी आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं. नवाज शरीफ ने कहा था कि आप उन्हें गैर सरकारी किरदार कह सकते हैं, लेकिन हम उन पर मुकदमा क्यों नहीं चलाते? नवाज शरीफ का बयान सार्वजनिक होने के बाद पाक सेना उनके खिलाफ हो गयी थी और उसने उन्हें जेल तक पहुंचा दिया. हम आप जानते हैं कि 26 नवंबर, 2008 को लश्कर के आतंकवादियों ने मुंबई पर हमला किया था, जिसमें 166 लोग मारे गये थे. उनमें से एक अजमल कसाब जिंदा पकड़ लिया गया था. भारत द्वारा पुख्ता सबूत देने के बावजूद पाकिस्तान हमेशा इस हमले में अपनी भूमिका को खारिज करता आया है.

हमें एक और पड़ोसी देश चीन पर भी निगाह रखनी होगी, जिसकी मदद से पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दबावों से बचता आ रहा है. देश की जनता को भी इस बात को लेकर जागरूक करना होगा कि चीन आपका शुभचिंतक नहीं है. चीन के अड़ंगे के कारण आत्मघाती हमले के एक हफ्ते बाद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद इसकी कड़ी निंदा कर पाया. चीन ने पाकिस्तान को बचाने के लिए पूरा जोर लगा दिया था. चीन ने इस बात की पूरी कोशिश की थी कि यह बयान जारी न हो पाए. भारतीय प्रयासों और अमेरिका के समर्थन के कारण ही सुरक्षा परिषद के सभी सदस्यों को इसकी मंजूरी मिल सकी. पुलवामा आतंकी हमले को लेकर सुरक्षा परिषद में एक हफ्ते भारी खींचतान चली. पुलवामा पर 15 फरवरी को निंदा का बयान जारी होने वाला था, लेकिन चीन इसमें बदलाव करने के लिए लगातार इसे आगे बढ़वाता रहा. सुरक्षा परिषद के सदस्य देश 15 फरवरी को अपना बयान जारी करनेवाले थे, लेकिन चीन ने इसे आगे बढ़वाते हुए 18 फरवरी तक का समय मांगा. प्रक्रिया को टालने के लिए चीन ने दो बार इसमें बदलाव के प्रस्ताव रखे. चीन चाहता था कि आतंकी संगठन जैशे मोहम्मद को दोषी ठहराये जाने का जिक्र न किया जाए. बावजूद इसके सुरक्षा परिषद ने पुलवामा के आतंकी हमले की कड़ी निंदा की है और अपने बयान में जैश का जिक्र किया है. चीन आतंकी सरगना मसूद अजहर पर वैश्विक प्रतिबंध लगाने की भारत की कोशिशों में बार बार अड़ंगा लगाता आया है.

भारत और पाकिस्तान को अलग हुए 70 साल से अधिक का अरसा हो गया, लेकिन रिश्ते आज तक सामान्य नहीं हो पाये हैं. विभाजन के रूप में हमने आजादी की बहुत बड़ी कीमत चुकायी है. विभाजन के दौरान हुई हिंसा में लगभग पांच लाख लोग मारे गये थे और करीब डेढ़ करोड़ लोगों को अपना घर-बार छोड़ कर शरणार्थी बनना पड़ा था. दुनिया में आजादी की इतनी बड़ी कीमत कहीं अदा नहीं करनी पड़ी है. इतिहास के इस काले अध्याय को हमें विस्मृत नहीं करना चाहिए.

बोधि वृक्ष

कृष्ण का रूप

यद्यपि भगवान कृष्ण असीम तथा ससीम को नियंत्रित करते हैं, किंतु वे इस जगत से विलग रहते हैं. उनके योगमैरम या अचिंत्य दिव्य शक्ति के विषय में कहा गया है कि वे एक साथ ससीम तथा असीम को वश में रख सकते हैं. तो वे भी उनसे पृथक रहते हैं. यद्यपि मूर्ख लोग यह सोच भी नहीं पाते कि मनुष्य रूप में उत्पन्न होकर भगवान कृष्ण किस तरह असीम तथा ससीम को वश में कर सकते हैं, किंतु जो शुद्धभक्त हैं, वे इस बात को स्वीकार करते हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि कृष्ण भगवान हैं. अतः वे पूर्णतया उनकी शरण में जाते हैं और कृष्ण भावनामृत में रहकर भगवान कृष्ण की भक्ति में अपने को रत रखते हैं. भगवान कृष्ण का दावा है कि यद्यपि भौतिक शक्ति अत्यंत प्रबल है, किंतु वह उनके वश में रहती है और जो भी उनकी शरण को भक्तिभाव में ग्रहण कर लेता है, वह इस माया के वश से बाहर निकल आता है. यदि भगवान कृष्ण का शरणागत जीव माया के प्रभाव से बाहर निकल सकता है, तो भला परमेश्वर जो संपूर्ण विराट जगत का सृजन, पालन तथा संहारकर्ता है, हम मनुष्यों के जैसा शरीर कैसे धारण कर सकता है! अज्ञानी नहीं समझ सकते हैं कि सामान्य व्यक्ति के रूप में प्रकट होनेवाले भगवान कृष्ण समस्त परमाणुओं तथा इस विराट ब्रह्मांड के नियंता किस तरह हो सकते हैं. वृहत्तम तथा सूक्ष्मतम तो उनकी विचारशक्ति से परे होते हैं. अतः वे सोच भी नहीं सकते कि मनुष्य जैसा रूप कैसे एक साथ विशाल को तथा अणु को वश में कर सकता है. यदि हम भगवद्गीता तथा श्रीमद्भागवद जैसे प्रामाणिक ग्रंथों का अनुशीलन कृष्णतत्व समझने के लिए करें, इसका सूक्ष्मता से अध्ययन करें, तो समझ सकते हैं कि कृष्ण श्रीभगवान हैं. वे सामान्य व्यक्ति नहीं हैं. श्रीमद्भागवद में शौनक आदि मुनियों ने सूत गोस्वामी से कृष्ण के कार्यकलापों के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा- भगवान श्रीकृष्ण ने बलराम के साथ-साथ मनुष्य की भांति क्रीड़ा की और इस तरह प्रच्छन्न रूप में उन्होंने अनेक अति मानवीय कार्य किये.

स्वामी प्रभुपाद

नामवर की नामवरियत

रविभूषण
वरिष्ठ साहित्यकार
ravibhushan1408@gmail.com

नामवर एक महान शिक्षक और बड़े आलोचक थे. अब उनकी अनुपस्थित उपस्थिति है. शरीर से अनुपस्थित, पर अपनी कृतियों में सदैव उपस्थित. नामवर नामवर थे और हमेशा रहेंगे भी. उनकी नामवरियत पर विचार भी होता रहेगा.

जैसे शमशेर की शमशेरियत, वैसे नामवर की नामवरियत. इस नामवरियत पर विस्तार से विचार बाकी है. नामवर सिंह ने पहले अपने को निर्मित किया, फिर पूरे वातावरण को. 'पुस्तक पगी आंखें' त्रिलोचन ने 1957 में ही लिखा था. हिंदी आलोचना के इतिहास में नामवर जैसे यश-प्रसिद्धि, अन्य किसी आलोचक को नसीब नहीं हुई. रामचंद्र शुक्ल से भी अधिक नामवर लंबे समय तक आलोचना और आलोचना-चर्चा के केंद्र में रहे. एक नामवर में कई नामवर हैं- आलोचक, विमर्शकार, अध्येता, अध्यापक, संपादक, विवादी, संवादी, डिप्लोमेट नामवर. उनकी नामवरियत पचास के दशक के अंतिम वर्षों से बननी शुरू हुई- नयी कहानी और नयी कविता की आलोचना-बहस से. मार्क्सवाद और रूपवाद का ऐसा सह-संबंध किसी भी हिंदी मार्क्सवादी आलोचक में नहीं है. नामवरियत उनके अपने 'अंदाज-ए-बयां' में भी है, उनकी वक्तृता और वांग्मिता में भी है. वे एक साथ रूपवादी आलोचकों से भिड़े और मार्क्सवादी आलोचकों से भी. उन्होंने जितनी गुत्थियां सुलझायी, उतनी उलझायी भी- 'जो समझ जाती है, गुत्थी फिर से उलझाता हूं मैं'. 'इतिहास और आलोचना' के 16 निबंधों में जो 1952-56 के बीच हैं, उन्होंने पोलेमिक्स (वाद-विवाद) की और मार्क्सवादी आलोचक के रूप में खड़े-तने रहे, पर निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहानी की भरपूर प्रशंसा करने और निर्मल को पहला नया कहानीकार सिद्ध करने के बाद वे रूपवाद की ओर मुड़े. 'कविता के नये प्रतिमान' (1968) में उनका विवेचन-चिंतन मार्क्सवादी नहीं है. इस पुस्तक के पहले 'तनाव' शब्द कविता की आलोचना के केंद्र में नहीं था. पहली बार इसी पुस्तक में 'तनाव' केंद्रीय शब्द बना.

नामवर ने एक साथ मार्क्स, एंगेल्स, कॉडवेल, रॉल्फ फैक्स, जॉर्ज लुकाच और 'नयी समीक्षा' के आधार-स्तंभ डॉन क्रोरैनसम, क्लिंथ ब्रुक्स, आइवर विंटर्स, एलेन टेट आदि को देखा, पढ़ा और समझा. कथाकारों में भी उन्होंने टॉलस्टॉय, दास्तोवस्की, चेखव और पुश्किन के साथ-साथ फ्लाबेयर, स्टेंढल, लारेंस, थॉमस मान और डिकेंस को पढ़ा. स्वाभाविक था उनकी आलोचना में एक नये रसायन का बनना. नामवर ने हिंदी आलोचना को कोई नयी 'समीक्षात्मक शब्दावली' (क्रिटिकल टर्म्स) नहीं दी, कोई नया शब्द-पद निर्मित नहीं किया, फिर भी वे छाये रहे. यह बिना नामवरियत के संभव नहीं थी. नामवर की नामवरियत समीक्षाशास्त्र तथा रचनात्मक साहित्य के बीच एक वस्तुपरक सह-संबंध (ऑब्जेक्टिव कोरिलेटिव) स्थापित करने में है. यह रामचंद्र शुक्ल में था, पर छायावादी कवियों से उनका भाव-विचार-संबंध वाजपेयी के भाव-विचार-संबंध से भिन्न था. नामवर ने समकालीन लेखन को आलोचना के केंद्र में स्थापित किया. तूफान खड़ा होना लाजिमी था. उन्होंने हवा बनायी और आंधियां भी खड़ी की. 'कविता के नये प्रतिमान' में नगेंद्र को उन्होंने किनारे किया. नामवर ने अपने विमर्श में भारती, अज्ञेय, साही, लक्ष्मीकांत वर्मा सबको किनारे किया. बाद में अज्ञेय के प्रति वे मुलायम हुए. राज्यसत्ता को नामवर ने कभी चुनौती नहीं दी. वे जिस जेएनयू में (1 नवंबर, 1974 से 1 मई, 1987 तक) रहे- भारतीय भाषा केंद्र के संस्थापक, अध्यक्ष और प्रोफेसर के रूप में, उनके जीवन-काल में ही उस संस्थान पर लगातार आक्रमण हुए.

नामवर ने साहित्य के 'स्वधर्म' की रक्षा की. उन्होंने वैचारिक लड़ाई लड़ी. रामचंद्र शुक्ल और रामविलास शर्मा से भी. इन दोनों का कद नगेंद्र से हजारों गुना बड़ा था. नामवर के लिए इन दोनों का कद छोटा करना संभव नहीं था. उन्होंने कई सवाल उठाये. साहित्य और आलोचना में रणनीति बनायी और हिंदी के सर्वाधिक विवादप्रिय आलोचक बने. उनके मौन और मुस्कान का भी अर्थ था और नामवर की आंखें/ नामवर का पुरबिया ठाठ और रंग था. नामवर का अपना नामवरी रंग था. वे हिंदी के अकेले आलोचक थे, जिनमें एक साथ 'बुद्धि, विद्या और वांग्मिता' थी. नामवर ने अपने को नामवर बनाया और फिर उनके शिष्यों और प्रशंसकों ने उन्हें कंधों पर उठा लिया. उनके पहले किसी आलोचक ने वाचिक परंपरा कायम नहीं की थी. 'बकलम खुद' से अब तक नामवर की जितनी पुस्तकें प्रकाशित हैं, अभी तक उनका समग्र पाठ नहीं किया गया है और उस संदर्भ का भी नहीं, जिसे वे टेक्स्ट से अधिक महत्व देते थे. एक लंबे समय तक एक आलोचक का केंद्र में बने रहना साधारण घटना नहीं है. हिंदी के वे अपने 'सर्जनात्मक आलोचक' हैं. 'पोलेमिकल क्रिटिक' हैं.

हिंदी के जिन अध्यापकों ने नामवर को अधिक नहीं पढ़ा है, वे भी उनके व्याख्यानों को सुन कर उनके प्रशंसक बने. पचास वर्ष पहले अक्तूबर-दिसंबर 1969 की 'आलोचना' में 'विश्वविद्यालय और साहित्य शिक्षा' पर उन्होंने एक संवाद आयोजित किया था. उनकी चिंता यह थी कि साहित्य एक 'विश्वविद्यालयीय विषय' बन गया है. वे साहित्य के 'स्वधर्म से अपक्षरण' को 'कुछ शिक्षकों की अयोग्यता' का परिणाम न मानकर 'विश्वविद्यालयीय तंत्र में पूंजीवाद के प्रवेश की देन' कहते थे- 'पुराणों की भाषा में कहें, तो यह एक ऐसा राक्षस राज है, जिसमें आग जलना छोड़ देती है, हवा बहना छोड़ देती है, पानी शीतलता छोड़ देता है अर्थात् प्रत्येक वस्तु अपना धर्म छोड़ देती है.' नामवर एक महान शिक्षक और बड़े आलोचक थे. अब उनकी अनुपस्थित उपस्थिति है. शरीर से अनुपस्थित, पर अपनी कृतियों में सदैव उपस्थित. नामवर नामवर थे और हमेशा रहेंगे भी. उनकी नामवरियत पर विचार भी होता रहेगा.

आपके पत्र

अब गेंद सरकार के पाले में

पुलवामा आतंकी हमले का आक्रोश अब क्रिकेट के मैदान पर भी दिख रहा है. वर्ल्ड कप में भारत पाकिस्तान मैच को लेकर सीओए ने केंद्र सरकार के पाले में गेंद डाल दी है. अब पाकिस्तान के साथ भिड़ंत होगी या नहीं, इसका फैसला केंद्र सरकार को करना है, जिसे बीसीसीआइ भी स्वीकार करेगी. भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ने भी कहा कि इस संबंध में जो भी फैसला लिया जायेगा, वह उन्हें मंजूर होगा. सचिन तेंदुलकर और सुनील गावस्कर ने कहा था कि विरोध की बजाय हमें पाकिस्तान से खेलना चाहिए और उसको हरा कर मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए. ऐसा नहीं करने से भारतीय टीम को काफी नुकसान भी हो सकता है. चेतन चौहान ने भी कहा है कि वर्ल्ड कप जैसे वैश्विक टूर्नामेंट में पाकिस्तान का बहिष्कार करना आसान नहीं है. अगर टीम इंडिया मैच नहीं खेलती है, तो उस पर बैन और जुर्माना लग सकता है. अब सरकार के निर्णय पर सबकी नजर है और इस पर निर्णय करना सरकार के लिए भी आसान नहीं होगा.

अमन सिंह, प्रेमनगर,बरेली

जहरीली शराब से मौत

उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड के बाद अब असम में भी जहरीली शराब के सेवन से मौत की खबर आ रही है. अब तक लगभग 124 लोगों की मौत हो चुकी है. यूपी और उत्तराखंड में सैंकड़ों लोग जहरीली शराब की चपेट में आ कर अपनी जांच गंवा चुके हैं. यहां एक बड़ा सवाल उठता है कि आखिर जहरीली शराब का धंधा क्यों नहीं रुक रहा? वास्तविकता है कि यह अवैध कारोबार दिन- प्रतिदिन अपना पैर फैलाता ही जा रहा है. न जाने देश में कितनी जगहों पर इस तरह के अवैध धंधे चल रहे हैं. कोई कार्रवाई न होने के कारण इनके कारोबारियों का मनोबल बढ़ता ही जा रहा है. पुलिस-प्रशासन हाथ-पर-हाथ धरे बैठी है. इनकी आंखें तब खुलती है, जब घटना हो जाती है. सरकार को इन कारोबारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए, ताकि भविष्य में किसी भी जगह इस तरह लोगों की मौत न हो.

शुभम गुप्ता, धनबाद

रात में ट्रैफिक सिग्नल

रांची में नये ट्रैफिक सिग्नल और वीडियो कैमरे लगा कर ट्रैफिक की समस्या को हल करने का प्रयास किया जा रहा है. वैसे तो यह बहुत ही अच्छा प्रयास है, लेकिन एक बात समझ में नहीं आयी कि रात के 11 बजे, जब सड़कों पर ट्रैफिक बिल्कुल ही नहीं होता, उस समय भी ट्रैफिक सिग्नल लाल हुआ और कुछेक गाड़ियों को मजबूरी में रुकना ही पड़ा, जबकि चारों तरफ की सड़कें खाली थीं. इस तरह बेवजह गाड़ियों को रात में रोकना और उनका समय बर्बाद करना जिला प्रशासन की अदूरदर्शिता को उजागर करता है. देश के अन्य शहरों के मॉडल का इस्तेमाल करें, तो ऐसी समस्या नहीं आयेगी. बड़े शहरों में रात में (नौ-दस बजे के बाद) सभी ट्रैफिक सिग्नल को पीला कर दिया जाता है, ताकि लोगों को अनावश्यक रुकना न पड़े और अपनी सूझबूझ से आसानी से पार कर लें. उम्मीद है जिला प्रशासन इस ओर ध्यान देगा.

मृणाल कांति रक्षित, सेक्टर-2, धुर्वा, रांची

कुछ अलग

हम सब चाइनीज!

आलोक पुराणिक
वरिष्ठ व्यंग्यकार
puranika@gmail.com

लगता है पूरी दुनिया ही चाइनीज हुई जा रही है. मोबाइल अधिकांश चाइनीज हो लिये हैं या कोरियन, बचे-खुचे मोबाइल अमेरिकन या जापानी हैं और उसके भी बचे-खुचे जो हैं, वह भारतीय मोबाइल रह गये हैं. हर दस में सात स्मार्टफोन चाइनीज हैं. यूं हम सघन घणे बहुत ही भारी राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत हैं. भावनाएं राष्ट्रीय हैं, पर फोन चाइनीज हैं. सपने अमेरिकन हैं.

पाकिस्तानी आतंक के पीछे चीन का फाइनेंस है. चीन का फाइनेंस कहां से आता है? जी वह उन भारतीयों की जेब से भी आता है, जिनके हर दस स्मार्टफोनों में से सात चाइनीज होते हैं. दस में सात स्मार्टफोन चाइनीज हैं, पर दिल हिंदुस्तानी है, जिसकी भावनाएं चाइनीज टाइप हैं, कतई फर्जी हैं. दिल हिंदुस्तानी बचा है. पर कईयों के दिल का ऑपरेशन हो चुका है. दिल में ऑपरेशन के बाद एक उपकरण डाल दिया जाता है, जिसे स्टेंट कहा जाता है, यह चाइनीज हो सकता है. ऐसे मामलों में दिल भी चाइनीज माना जा सकता है. कभी-कभी लगता है कि दिल भी चाइनीज ही हो लिया है, जो एक के बाद एक के बाद चाइनीज स्मार्टफोनों पर आये चले जा रहे हैं.

चीन बहुत गहरे तक घुसा हुआ है, दिल से लेकर दिमाग तक, मोबाइल से लेकर स्टाइल तक. बड़े-बड़े भारतीय स्टार चाइनीज ब्रांडों के इश्तेहार कर रहे हैं. खैर, फिल्म स्टारों की बात तो समझ आती है, पर इधर बैडमिंटन जगत के कुछ बड़े नामों के चाइनीज ब्रांडों से जुड़ने की खबरें आयीं. खिलाड़ी भी चाइनीज हो लिये हैं. खिलाड़ी क्या करें. खिलाड़ियों की आफत यह है कि जब तक वह तमाम चीजों को बेचते न दिखें, उन्हे बड़ा नहीं माना जाता. क्रिकेट में चेतेश्वर पुजारा टेस्ट क्रिकेट के बहुत बड़े बल्लेबाज हैं. पर उनके बारे में एक सवाल उठा कि वह तो तमाम ब्रांड बेचते हुए नहीं दिखायी देते, तो हम उन्हें बड़ा खिलाड़ी क्यों मान लें. बड़प्पन सिर्फ खेल में ही नहीं चाहिए, बड़े रिकॉर्ड सेल्समैनशिप में भी चाहिए. भारतीय आइटम ना मिलें बेचने को तो जापान, चीन कहीं के भी बेच लो. अब बिकवानेवाले ही चीन से आ रहे हैं, तो खिलाड़ी क्या करें. महानता का रास्ता अब चाइनीज होने के रास्ते से जाता है, दिल से भी दिमाग से भी चाइनीज. हम भी चाइनीज, तुम भी चाइनीज. वे भी चाइनीज, ये भी चाइनीज.

चीन सिर्फ देश नहीं है, चाइनीज सुनते ही घटिया और फर्जी क्वॉलिटी का ध्यान आता है. पर यही तो हम सब भी हो लिये हैं, मोबाइलों की तरह. चीन जो एक तरफ भारत से पैसा कमाता है, दूसरी तरफ भारत विरोधी पाकिस्तानी आतंकी मसूद अजहर को बचाता भी है. चीन का फर्जीपना तो समझ में आता है, यह उसका चरित्र है. पर भारतीय भी कतई चाइनीज हुए जा रहे हैं, सिर्फ स्मार्टफोनों के मामले में ही नहीं.

एक चाइनीज फोन से दूसरे चाइनीज फोन पर मैसेज जाता है- राष्ट्रभक्ति सर्वोपरि है, हमें देश बचाना है. चाइनीज फोन पर मैसेज चाइनीज फोन को जा रहा है, पर बचाना उससे भारत देश है. कितना चाइनीज विचार है ना यह?

देश दुनिया से

सिर्फ प्रतिबंध नहीं, सख्त कार्रवाई करे पाकिस्तान

हाफिज सईद के संगठन जमात-उद-दावा के साथ ही उससे जुड़ी संस्था फलाह-ए-इंसानियत पर पाकिस्तान ने प्रतिबंध लगा दिया है. पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में वहां की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति (एनएससी) ने यह फैसला लिया. प्रधानमंत्री कार्यालय से एक पत्र जारी हुआ कि राज्य को आतंकवादियों का बंधक नहीं बनने दिया जायेगा. जमात-उद-दावा निश्चित रूप से लश्कर-ए-तैयबा का ही अवतार है, जिससे पाकिस्तान को बदनाम होना पड़ा है. हालांकि, यह प्रतिबंध काफी नहीं है, कार्रवाई जरूरी है अगर ऐसे संगठनों के खिलाफ आतंक फैलाने के सबूत हैं. पिछले दो दशक से पाकिस्तान में ऐसे कई आतंकी संगठनों पर प्रतिबंध लगा, लेकिन वे फिर किसी और नाम से खड़े होते रहे. पुलवामा हमले के बाद इमरान सरकार द्वारा लगाया गया प्रतिबंध सराहनीय है, जैसा कि उन्होंने कहा है कि पाकिस्तान की सरजमीं को आतंक से गंदा करनेवाले लोग पाकिस्तान के दुश्मन हैं. ये सारे कदम यह साबित करते हैं कि ये संगठन न सिर्फ पाकिस्तान की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरनाक हैं, बल्कि इससे पड़ोसी देशों से रिश्ते भी खराब होने की संभावना है. पाकिस्तान को इन संगठनों पर सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है.

DAWN

कार्टून कोना

साभार : बीबीसी

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है